بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in

.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 16.01.2026

आँहज़रत ﷺ की मुहब्बते इलाही का ईमान बढ़ाने वाला तज़किरा (वर्णन)।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के.,स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (सुलह महीने की तिथि 16,1404 हश) 16.01.26

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मैंने पिछले एक ख़ुत्बे में आँहज़रत सललल्लाहू अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से, आप स. की अल्लाह से मुहब्बत के पहलू का वर्णन किया था, उसके बारे में ही आज कुछ और बयान करूंगा।

जवानी में और नबुव्वत के दावे से पहले भी आप स. में अल्लाह से मुहब्बत का ऐसा जोश था कि आप स. इससे बेताब (व्याकुल) होकर गुफा में जाकर प्यारे ख़ुदा से राज़ ओ नियाज़ (प्रेम और भक्ति की बातें) में मसरूफ़ (लीन) हो जाते थे। इसी मुहब्बत का ज़िक्र (वर्णन) करते हुए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. बयान फ़रमाते हैं.....कि असल बात यह है कि जब अल्लाह तआला के साथ उन्स (निकटता) और ज़ोक़ (रुचि) पैदा हो जाता है, तो फिर दुनिया और दुनिया वालों से एक नफ़रत और क्राहियत (अरुचि) पैदा हो जाती है, बित्तबा (स्वभाविक रूप से) तन्हाई (एकान्त) और ख़िलवत (गुप्त स्थान) पसंद आती है। आँहज़रत ﷺ की भी यही हालत थी। अल्लाह तआला की मुहब्बत में आप इस क़द्र (इतना आधिक) फ़ना हो चुके थे कि आप स. इस एकांत में ही पूरी लज़्ज़त (आनन्द) और ज़ोक़ (दिलचस्पी) पाते थे। ऐसी जगह में जहां कोई सुविधा और आराम का

सामान (व्यवस्था) न था, जहां जाते हुए भी डर लगता हो, आप स. वहाँ कई कई रातें अकेले गुज़ारते थे। इससे यह भी मालूम होता है कि आप स. कैसे बहादुर और शूर वीर थे। जब ख़ुदा तआला से ताल्लुक़ शदीद (घनिष्ट सम्बन्ध) हो तो फिर दलेरी भी आ जाती है इस लिए मोमिन कभी बुज़दिल (कायर) नहीं होता, दुनियादार लोग डरपोक होते हैं, उनमें असली बहादुरी नहीं होती।

हुज़ूरे अनवर ने ग़ारे हिरा (हिरा नामक गुफा) में इबादते इलाही का वर्णन करते हुए हज़रत आयशा रज़ी. की बयान की हुई एक हदीस बड़ी तफ़सील (विस्तार पूर्वक) से बयान फ़रमाई।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला अपने फैज़ (दया और कृपा) को सई (चेष्टा, प्रयत्न) और मुजाह्दे (संघर्ष) से मुनहसिर (आधारित) फ़रमाता है, और इसमें सहाबा रज़ीअल्लाहु अन्हुम का तर्ज़े अमल (मार्ग) हमारे वास्ते एक नमूना और उत्तम नमूना है। सहाबा की ज़िन्दगी में गौर (विचार) करके देखो, भला उन्हेंने महज़ (केवल) मामूली नमाज़ों से ही वे मदारिज (स्तर) हासिल कर लिए थे? नहीं, बल्कि उन्होंने तो ख़ुदा की रज़ा पाने के लिए अपनी जानों तक की चिंता नहीं की और भेड़ बकरियों की तरह ख़ुदा की राह में क़ुरबान हो गए तब जाकर कहीं उनको यह रुतबा (प्रतिष्ठा, मान सम्मान) हासिल हुआ था।

आप अलै. फ़रमाते हैं कि अकसर लोग हमने ऐसे देखे हैं कि वे यही चाहते हैं कि एक फूँक मारकर उनको दर्जात दिला दिए जाएं और अर्श (अल्लाह का सिंहासन) तक उनकी रसाई हो जाए। आप अलै. ने फ़रमाया कि हमारे रसूले अकरम ﷺ से बढ़ कर कौन होगा, वे अफ़्ज़लुल बशर, अफ़्ज़लुर्रुसुल वल अम्बिया थे(सर्वोत्तम मानव एवं सर्वोत्तम नबी और रसूल), उन्होंने ही फूँक से वे काम नहीं किये तो और कौन है, जो ऐसा कर सके? देखो! आप स. ने ग़ारे हिरा में कैसे कैसे रियाज़ात (घोर तपस्सिया) किए, ख़ुदा जाने कितनी मुद्दत तक तज़र्रोआत (विनयशीलता) और गिर्याओ ज़ारी (अल्लाह के सम्मुख रोना धोना) करते रहे, तज़किये (शुद्धि प्राप्ति) के लिए कैसी कैसी जांफ़शानियाँ (जान तोड़ प्रयास) और कठोर से कठोर परिश्रम किये, तब जाकर कहीं ख़ुदा तआला की तरफ़ से फैज़ान नाज़िल हुआ।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की मुहब्बत में आप स. की नमाज़ों की यह कैफ़ियत थी कि मुतर्रफ़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा कि मैं नबी स. के पास आया और आप स. नमाज़ पढ़ रहे थे। आप स. के सीने से हंडिया के उबलने की तरह की आवाज़ आ रही थी। आप स. इतनी शिद्दत से रो रहे थे और आह ओ ज़ारी कर रहे थे कि यूं लग रहा था कि जैसे हंडिया में पानी उबल रहा है।

हज़रत आयशा रज़ी. की रिवायत के मुताबिक़ आप स. इतनी ज़्यादा इबादत करते और इबादत के समय खड़े रहते थे कि आप स. के पाँव पर सूजन आ जाती थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. आँहज़रत ﷺ की अल्लाह से मुहब्बत और इबादतों के ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं कि हज़रत आएश रज़ी. फ़रमाती हैं कि जब आप स. मर्ज़ुल मौत (मृत्यु रोग) में मुब्तला हुए तो सख्त ज़ोफ़ (अति दुर्बलता) के कारण नमाज़ पढ़ाने पर क़ादिर (सामर्थ्य) नहीं थे इस लिए आप स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को नमाज़ पढ़ाने का आदेश दिया। आप रज़ी. फ़रमाती हैं कि यह आदेश देने के बाद जब आप स. ने मर्ज़ (रोग) में खिफ़फ़त (कमी) महसूस की तो आप स. आदमियों के सहारे नमाज़ पढ़ने के लिए निकले। हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं इस समय मेरी आँखों के सामने वह नज़ारा है कि बड़े दर्द की वजह से आप स. के क़दम ज़मीन से छूते जाते थे। इस हदीस से मालूम होता है कि आप स. को कितनी ही भयानक बीमारी हो, आप स. ख़ुदा तआला की याद को न भुलाते, आम तौर पर लोगों को देखा गया है कि ज़रा तकलीफ़ हुई और सब इबादतें भूल गईं। बेशक ज़ाहिरन यह बात मामूली मामूली होती है, लेकिन ज़रा रसूले करीम ﷺ की इस हालत को देखो, जिसमें आप स. मुब्तला थे, फिर इस ज़िक्रे इलाही के शौक़ को देखो कि जिसमें आप स. नमाज़ के लिए दो आदमियों के कन्धों पर हाथ रख कर तशरीफ़ लाए, तो मालूम होगा कि यह कोई छोटी बात नहीं थी बल्कि आप स. के दिल में जो अल्लाह की याद का शौक़ था उसके इज़हार (अभिव्यक्ति) का एक आईना है।

हर एक समझ बूझ रखने वाला आदमी समझ सकता है कि अल्लाह का ज़िक्र आप स. की ख़ुराक थी और उसके बिना आप स. अपने जीवन में कोई खुशी न पाते थे। इसी तरफ़ आप स. ने इशारा फ़रमाया कि जिन चीज़ों से मुझे मुहब्बत है उनमें से एक قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ है, यानी (अर्थात) नमाज़ में मेरी आँखें ठंडी हो जाती हैं। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि लोग पूछते हैं और अकसर आजकल के बच्चे और नौजवान भी सवाल करते हैं कि नेकियाँ क्या हैं और किस तरह पता लगे कि अल्लाह तआला ख़ुश होता है? अल्लाह तआला इसी तरह राज़ी होता है कि नेकियाँ करो और केवल ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए करो, इंसान अपना जाएज़ा (आत्म निरीक्षण) ख़ुद ले सकता है, किसी बाहर के आदमी को जज बनाने के ज़रुरत नहीं है। इंसान ख़ुद समझ सकता है कि जो नेकियाँ वह कर रहा है अगर वह ख़ुदा तआला के लिए कर रहा है तो फिर अल्लाह तआला को यक़ीनन (निःसन्देह) पसंद हैं।

आप स. की इबादत एक तसलसुल (निरंतर) का रंग रखती थी, फिर और भी जलवा नुमाई होती, फिर आप स. अपने रब की इबादत में मशगूल हो जाते और यह राज़ ओ नियाज़ का सिलसिला ऐसा लम्बा होता कि बारहा इबादत करते करते आप स. के पाँव सूज जाते। सहाबा रज़ी. निवेदन करते कि या रसूलुल्लाह स! इस क़दर इबादत की आप स. को क्या ज़रुरत है? आप स. के तो गुनाह माफ़ हो चुके हैं। इसका जवाब आप स. भी यही देते कि फिर क्या मैं शुक्र न करूं? हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह अल्लाह! क्या इश्क़ है, क्या मुहब्बत है, क्या प्यार है, ख़ुदा

तआला की याद में खड़े होते हैं और अपने तन बदन का कोई होश नहीं रहता। मगर वह दुःख जो लोगों को बेचैन कर देता है और देखने वाले उससे प्रभावित हो जाते हैं, आप स. कुछ असर नहीं करता। क्या इखलास (निष्ठा) से भरा और कैसी शुक्रगुज़ारी ज़ाहिर करने वाला यह जवाब है और किस तरह आप स. के क़ल्बे मुतह्हर (पवित्र दिल) को खोल कर पेश कर देता है।

फिर इसी तसलसुल में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया कि आप स. किस तरह अपने कामों में लगे रहते थे, यह नहीं कि सिर्फ़ इबादत कर ली और बाकी काम छोड़ दिए। दिन भर भी आप स. ख़ुदा तआला के नाम की आशाअत (प्रचार एवं प्रसार) और उसकी इताअत (आज्ञा पालन) को रिवाज देने की कोशिश में लगे रहते।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया- पस हमें आप स. के नमूने पर चलते हुए नमाज़ों और इबादत के ये स्तर हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए, तभी हम हक़ीक़ी (वास्तविक) मुसलमान कहला सकते हैं। हुज़ूरे अनवर ने बयान फ़रमाया कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने हज़रत मीर नासिर नवाब साहब रज़ी. को एक ख़त लिखते हुए फ़रमाया कि जो आपने अपने अमली तरीक़ के लिए पूछा है, वह यही बात है कि रसूलुल्लाह ﷺ के वास्तविक आज्ञा पालन की तरफ़ झुकें, रसूलुल्लाह स. ने जिन अमलों पर बहुत अधिक अपनी मुहब्बत ज़ाहिर फ़रमाई है, वे दो हैं- एक नमाज़ और एक जिहाद। नमाज़ के बारे में आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि قُرَّةُ عَيْنِيْ فِي الصَّلٰوةِ अर्थात आँख की ठंडक नमाज़ में रखी गई है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि सो! इस ज़माने में जिहाद रूहानी सूरत में रंग पकड़ गया है और इस रंग का जिहाद यही है कि आलाए कलमा ए इस्लाम (इस्लाम के कलिमे की घोषणा) में कोशिश करें, यही जिहाद है, जब तक ख़ुदा तआला कोई दूसरी सूरत दुनिया में ज़ाहिर करे। हुज़ूरे अनवर ने ध्यान दिलाया कि अगर हम चाहते हैं कि इस जिहाद में हिस्सा लें तो फिर अल्लाह तआला की मुहब्बत और दुआओं की तरफ़ भी हमें ध्यान देना होगा, अपनी इबादतों की तरफ़ भी हमें ध्यान देना होगा, और अगर हम आप स. के उस्वे (नमूने) पर चलते हुए यह करेंगे तो तभी हमारे कामों में बरकत भी पड़ेगी। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

आखिर पर हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आज बंगला देश की जमाअत का जलसा भी हो रहा है, वहाँ मुखालफत (विरोध) काफ़ी होती है, उनके लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला उन सबको अपनी हिफाज़त में रखे और उनका जलसा भी शान्ति और सुविधा के साथ पूरा हो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब